रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली की दुनिया

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान इन्दौर की मासिक समाचार पत्रिका

"मानव जाति एक पक्षी के समान है, जिसके दो पंख हैं, एक पुरूष दूसरा स्त्री। जब तक दोनों पंख मजबूत न होंगे, एक सांझी शक्ति द्वारा हिलाए न जाएंगे, तब तक पक्षी की आकाश में ऊँची उड़ान असम्भव है।"

वर्ष –2 अंक 14 अप्रैल 2008 मूल्यः 5 रू.

नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग

आज के जमाने में शिक्षा सभी के लिए जरूरी है। चाहे कोई गाँव का हो या शहर का, लड़का हो या लड़की शिक्षा के बिना कोई भी आगे नहीं बढ़ सकता है। बचपन से लेकर बुढ़ापे तक जब भी अवसर मिले शिक्षा शुरू कर सकते हैं। शिक्षित होकर काम को ज्यादा अच्छे से कर सकते हैं। भारत के बहुत से गाँव में लोगों के पिछड़े रहने का सबसे मुख्य कारण शिक्षा की कमी है। शिक्षा के बिना न तो अपना विकास कर सकते हैं, न परिवार का और न समाज का। गाँवों में अक्सर स्कूल के होने के बावजूद भी बच्चों की पढ़ाई अधूरी रह जाती है। आपमें से ऐसे कई लोग होंगे जिनकी पढ़ाई किसी कारण से बीच में ही छूट गई होगी और परीक्षा नहीं दे पाए होंगे। यदि आप फिर से पढ़ाई करना चाहते हैं या बिल्कुल शुरू से पढ़ाई करना चाहते हैं तो निराश न हों। नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ ओपन स्कूलिंग एक ऐसा संस्थान है जहाँ प्रवेश लेकर आप किसी भी कक्षा की घर बैठे पढ़ाई कर परीक्षा दे सकते हैं। यह संस्थान कोई ऐसे स्कूल की तरह नहीं है जहाँ हर रोज जाना ही पड़ेगा। नेशनल ओपन स्कूलिंग का मुख्य उद्देश्य है शिक्षा सभी तक पहुँचे और कोई भी इससे दूर नहीं रहे।

नेशनल ओपन स्कूलिंग क्या है? कहाँ है? इसमें कैसे दाखिला मिलता है? क्या–क्या पढ़ सकते हैं? इसकी परीक्षा कैसे दे सकते हैं? इससे जुड़ी सभी जानकारियां आपके पास लेकर आ रही है 'बरली की दुनिया'। इसे पढ़ें और आसपास सभी लोगों को बताएं ताकि सभी शिक्षा के क्षेत्र में आगे बढ़ सकें।

◆ नेशनल ओपन स्कूलिंग : परिचय

नेशनल ओपन स्कूलिंग भारत सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय, दिल्ली द्वारा चलाया जाता है। यह सभी के लिए खुला है। इसका उन लोगों को ज्यादा फायदा है जो किसी कारण से पढ़ाई पूरी नहीं कर पाए हैं। लड़कियों, महिलाओं, ग्रामीण युवाओं, काम करने वाले, शारीरिक और मानसिक रूप से विकलांग, अनुसूचित जाति/अनुसूचित जनजाति और अन्य सुविधा से वंचित वर्गों जैसे–सड़क पर रहने वाले और काम करने वालों बच्चों को प्राथमिकता दी जाती है। इसमें दो तरह के पाठ्यक्रम हैं– शैक्षणिक शिक्षा और व्यवसायिक शिक्षा।

• शैक्षणिक शिक्षा

शैक्षणिक शिक्षा को तीन भागों में बाँटा गया है। मुक्त बेसिक शिक्षा, माध्यमिक शिक्षा और उच्चतर माध्यमिक शिक्षा। इसमें तीसरी से लेकर बारहवीं कक्षा तक की परीक्षा दे सकते हैं।

1. मुक्त बेसिक शिक्षा कार्यक्रम में तीसरी से लेकर आठवीं कक्षा तक है।
2. माध्यमिक शिक्षा में दसवीं कक्षा होती है, इस कक्षा में कोई भी प्रवेश ले सकता है। इसमें विज्ञान, गणित, भूगोल, अंग्रेजी, हिन्दी, इतिहास, सामाजिक विज्ञान, संस्कृत, भौतिकी, रसायनशास्त्र, जीवविज्ञान, व्यवसाय अध्ययन, गृह विज्ञान आदि कई विषयों की एक लंबी सूची है जिसमें से आप अपनी पसंद के कोई भी पाँच विषय चुन सकते हैं। इसको एक वर्ष में पूरा कर, परीक्षा में पास होकर दसवीं का प्रमाण पत्र मिलता है।
3. उच्चतर माध्यमिक शिक्षा में बारहवीं की परीक्षा पास कर प्रमाण पत्र ले सकते हैं। इसके लिए 10वीं कक्षा पास होना जरूरी है। यह पाठ्यक्रम एक वर्ष में पूरा कर सकते हैं।

• व्यवसायिक शिक्षा

नेशनल ओपन स्कूलिंग के व्यवसायिक शिक्षा में 76 विषय हैं। जिनमें से कृषि, ग्रामीण महिलाओं के स्वास्थ्य, चिकित्सा, वृद्धजनों की देखभाल, खिलौना निर्माण, सचिवीय पद्धति, पुस्तकालय विज्ञान, बिजली तकनीशियन, जूट उत्पादन, मुर्गीपालन, हिन्दी/अंग्रेजी टायपिंग, कटाई–सिलाई, पोषाक निर्माण, गृह विज्ञान, कम्प्यूटर, सूचना तकनीकी क्षेत्र, व्यवसाय, वाणिज्य और अध्यापक शिक्षा आदि शामिल हैं। व्यवसायिक शिक्षा जीवन में हमेशा काम आते हैं और नया रोजगार शुरू करने के नए–नए रास्ते खोलते हैं। सभी विषयों में अलग–अलग उद्योग धंधों की विशेषताएं दी गई हैं, जिनमें नए रोजगार और व्यवसाय से संबंधित प्रशिक्षण दिया जाता है। व्यवसायिक शिक्षा में अलग–अलग विषयों के लिए अलग–अलग शैक्षणिक योग्यताएं होती हैं। किसी विषय के लिए सिर्फ साक्षर होना जरूरी है तो किसी के लिए पाँचवीं, आठवीं, दसवीं या बारहवीं कक्षा पास होना जरूरी है। व्यवसायिक शिक्षा पूरा कर, आप अपना कोई भी नया रोजगार या व्यवसाय शुरू कर, दूसरों को भी काम देकर आप अपने साथ–साथ दूसरों की आर्थिक स्थिति सुधारने में भी मदद कर सकते हैं।

◆ प्रवेश फार्म

नेशनल ओपन स्कूलिंग में प्रवेश फार्म के लिए सबसे पहले विवरणिका मंगवानी होती है जिसका शुल्क मात्र 40/– रू. है। विवरणिका आप सीधे नेशनल ओपन स्कूलिंग के कार्यालय से या संस्थाओं/अध्ययन केन्द्रों से खरीद सकते हैं। कार्यालय का पता व फोन पेज नं. 6 पर लिखा है जहाँ आप पत्र लिखकर या फोन द्वारा संपर्क कर सकते हैं। नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा मान्यता प्राप्त 2800 से भी अधिक संस्था व अध्ययन केन्द्र हैं।

◆ विवरणिका

विवरणिका एक ऐसी पुस्तक होती है जिसमें प्रवेश फार्म होता है, इसमें प्रवेश की तिथि, प्रवेश एवं परीक्षा शुल्क तथा नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा चुने गए सभी शैक्षणिक व व्यवसायिक विषयों व अध्ययन केन्द्रों की जानकारी रहती है। शैक्षणिक व व्यवसायिक शिक्षा की विवरणिका अलग–अलग होती है। प्रवेश फार्म सीधे ही नेशनल स्कूलिंग के कार्यालय में जमा नहीं होते हैं। इन्हें अध्ययन केन्द्रों या संस्थाओं के द्वारा भेजा जाता हैं। प्रवेश फार्म भेजने के बाद नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा पहचान पत्र भेजा जाता है। पहचान पत्र मिलने के बाद नेशनल ओपन स्कूलिंग में आपका पाँच वर्ष के लिए पंजीकरण हो जाता है। पंजीकरण का मतलब आपका नाम प्रवेश सूची में दर्ज हो जाता है। अप्रैल–मई की परीक्षा के लिए पंजीकरण 15 जनवरी तक तथा माह अक्टूबर–नवम्बर की परीक्षा के लिए 15 जुलाई तक पंजीकरण होता है। पहचान पत्र वहीं से मिलता जहाँ प्रवेश फार्म जमा किया जाता है।

प्रवेश हो जाने के बाद नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा आपके द्वारा चुने गए विषयों की पुस्तकें भेजी जाती हैं जो आपको अध्ययन केन्द्र से मिलेगी और आपको स्वयं पढ़ना होता है। अध्ययन केन्द्र द्वारा समय–समय पर कक्षा लगाई जाती है इन कक्षाओं में जाकर आप कठिन प्रश्नों के उत्तर पूछ सकते हैं और पढ़ाई में आने वाली मुश्किलें दूर कर सकते हैं।

◆ परीक्षा के 9 अवसर

परीक्षाएं वर्ष में दो बार अप्रैल–मई और अक्टूबर–नवम्बर में होती हैं। परीक्षा देने के लिए पाँच वर्ष का समय होता है जिसमें नौ अवसर दिए जाते हैं। आप इन पाँच वर्षों में जब भी परीक्षा देने के लिए तैयार हो परीक्षा में बैठ सकते हैं। फेल होने का कोई डर नहीं होता है। उदाहरण के लिए आप एक परीक्षा में कोई भी एक या अधिक विषयों की परीक्षा दे सकते हैं और प्रमाण पत्र लेने के लिए आवश्यक विषय पास

होने तक अंक जमा कर सकते हैं। पास हुए विषयों की दोबारा परीक्षा देने की जरूरत नहीं है और शेष विषयों में पास होकर प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं।

◆ दोबारा प्रवेश की सुविधा

अगर आप पाँच वर्षों में चुने गए विषयों में से किसी विषय की परीक्षा नहीं दे पाए हों तो नेशनल ओपन स्कूलिंग में दोबारा प्रवेश लेने की सुविधा भी है। आप फिर से प्रवेश लेकर छूटे हुए विषयों की परीक्षा दे सकते हैं। उदाहरण के लिए यदि आप पिछले पाँच वर्षों में तीन विषयों में पास हुए हैं और अगले पाँच वर्षों में बाकी विषयों की परीक्षा देते हैं तो सभी विषयों के अंक एक साथ जोड़े जाएगें। पास हुए विषयों की दोबारा परीक्षा देने की जरूरत नहीं है। इस तरह की सुविधा अन्य कोई भी स्कूलों में नहीं है।

◆ आयु

नेशनल ओपन स्कूलिंग के शैक्षणिक या व्यवसायिक शिक्षा में प्रवेश के लिए कोई अधिकतम आयु सीमा नहीं होती है। दसवीं कक्षा में प्रवेश के लिए आयु कम से कम 14 वर्ष और बारहवीं कक्षा में आयु 15 वर्ष होनी चाहिए। व्यवसायिक शिक्षा में प्रवेश लेने के लिए आयु कम से कम 15 वर्ष होनी चाहिए।

◆ भाषा एवं विषयों का चुनाव

नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा चुने गए शैक्षणिक और व्यवसायिक विषयों में से आप अपनी पसंद का कोई भी विषय चुन सकते हैं। सारे विषय मुख्य रूप से हिन्दी, अंग्रेजी और उर्दू भाषा में होते हैं लेकिन परीक्षाएं 18 भाषाओं में से किसी भी भाषा असमिया, उड़िया, उर्दू, कन्नड़ ,कश्मीरी, गुजराती, तमिल, तेलुगु, पंजाबी, बंगाली, मराठी, मलयालम, हिन्दी, संस्कृत, सिंधी, कोंकणी, नेपाली और मणिपुरी में लिख सकते हैं।

मध्यप्रदेश में नेशनल ओपन स्कूलिंग स्कूल के व्यवसायिक संस्थान

व्यवसायिक शिक्षा के लिए नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा मान्यता प्राप्त मध्यप्रदेश के 24 जिलों बैतूल, भोपाल, छिंदवाड़ा, देवास, धार, ग्वालियर, होशंगाबाद, इंदौर, जबलपुर, झाबुआ, कटनी, खंडवा, खरगोन, नीमच, रीवा, रतलाम, शिवपुरी, सतना, शहडोल, सागर, सिहोर, टीकमगढ़, उज्जैन, विदिशा में 87 संस्थान हैं तथा छत्तीसगढ़ के बस्तर, बिलासपुर, धमतरी, दुर्ग, रायपुर, रायगढ़, राजनंदगांव तथा सरगुजा जिलों में 14 संस्थान हैं। इनमे से एक है बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, इन्दौर जिस नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा दो प्रकार के व्यवसायिक प्रशिक्षण की मान्यता प्राप्त है। इन प्रशिक्षणों में "कटाई सिलाई" व "हिन्दी/अंग्रेजी टाइपिंग" शामिल है।

बरली संस्थान में नेशनल ओपन स्कूलिंग की परीक्षा की शुरूआत

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान 1985 से इन्दौर में कार्यरत है। इस संस्थान में पिछले 23 सालों में मध्यप्रदेश के धार, झाबुआ, देवास, खरगोन, हरदा, खंडवा, भोपाल के अतिरिक्त छत्तीसगढ़, बिहार, उड़ीसा, आंध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, राजस्थान, उत्तरप्रदेश व मणिपुर के ग्रामीण आदिवासी क्षेत्रों के 450 गाँवों से 4000 महिलाएं प्रशिक्षण ले चुकी हैं। यहाँ व्यवसायिक प्रशिक्षण के साथ–साथ प्रशिक्षणार्थियों को कटाई–सिलाई, साक्षरता, स्वास्थ्य, मेरा अपना और अपने समुदाय का विकास, बागवानी व पर्यावरण, रंगाई–छपाई, सोलर कुकर, हिन्दी/अंग्रेजी टाइपिंग एवं कम्प्यूटर का प्रशिक्षण दिया जाता है।

सन् 1985 से 1997 तक संस्थान में दिए जा रहे प्रशिक्षणों को कोई सरकारी मान्यता नहीं थी। लेकिन फिर भी ज्यादातर महिलाओं को संस्थान द्वारा दिए गए प्रमाण–पत्र के आधार पर सरकार से कर्जा मिल जाता था और वे कोई भी काम धंधा शुरू कर कमाई का साधन कर लेती थी। सन् 1998 में बरली संस्थान को भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय द्वारा संचालित नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा दो प्रकार के व्यवसायिक प्रशिक्षण "कटाई–सिलाई" व "हिन्दी/अंग्रेजी टाइपिंग" के लिए सरकारी मान्यता दी गई। कटाई सिलाई का प्रशिक्षण छः माह तथा हिन्दी/अंग्रेजी टाइपिंग का प्रशिक्षण एक साल का होता है। कटाई–सिलाई का प्रशिक्षण सभी प्रशिक्षणार्थियों के लिए होता है। हिन्दी/अंग्रेजी टाइपिंग का प्रशिक्षण 10वीं पास प्रशिक्षणार्थियों को दिया जाता है।

संस्थान का आदिवासी महिलाओं से परीक्षा दिलवाने का पहला अनुभव

नबम्बर 1998 में जब संस्थान को नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा मान्यता मिली तब पहली बार निरक्षर महिलाओं से परीक्षा दिलवाने की बात सोची गई। यह बात हैरानी में डालने वाली थी कि जो कभी स्कूल नहीं गई वे परीक्षा में कैसे बैठेंगी। लेकिन फिर भी निरक्षर महिलाएं जिन्हें कभी भी किसी तरह से पढ़ने के लिए नहीं भेजा गया था उनसे परीक्षा दिलवाने की हिम्मत की गई। यह काम बहुत कठिन व चुनौतीपूर्ण था लेकिन फिर भी किसी ने हिम्मत नहीं हारी। सबसे पहले तो जिनको हिन्दी भी नहीं आती थी उन्हें हिन्दी

पढ़ना, लिखना और बोलना सिखाया गया। पढ़ने–लिखने का ऐसा माहौल बनाया गया ताकि पढ़ाई में उनकी रूचि बनी रहे और वे ज्यादा से ज्यादा सीख सकें।

तीन महीने तक लगातार कोशिश और मेहनत के बाद उन्होंने पढ़ना–लिखना सीख लिया था। अब उन्हें मानसिक रूप से परीक्षा के लिए तैयार करने की जरूरत थी ताकि परीक्षा को लेकर उनके मन में कोई डर न रहे। संस्थान में लड़कियों को जमीन पर बैठकर पढ़ाया जाता था लेकिन परीक्षा देने के लिए उन्हें बाकी स्कूलों के छात्रों की तरह टेबल–कुर्सी पर बैठना और लिखना सिखाया गया। प्रश्न पत्र पढ़कर समझाया गया और बताया गया कि किस प्रकार से प्रश्नों के उत्तर लिखने चाहिए। निर्धारित समय सीमा के अंदर प्रश्नों का उत्तर लिखना सिखाया गया। इसका अभ्यास उन्हें हर रोज करवाया गया। लिखित परीक्षा की तैयारी के साथ–साथ प्रशिक्षणार्थियों को कटाई व सिलाई करने का तरीका भी सिखाया गया। कटाई–सिलाई की प्रायोगिक परीक्षा की तैयारी के लिए पाठ्यक्रम के अनुसार कपड़े काटना और अच्छे से सिलना बताया गया। इन सबके साथ नेशनल ओपन स्कूलिंग के फार्म भरना, भरे हुए फार्म समय पर भेजना। ये सभी काम, किताबें, मार्गदर्शन व पत्र व्यवहार अंग्रेजी में होते थे जिसका संस्थान द्वारा हिन्दी में अनुवाद किया जाता था। नवम्बर 1998 में पहली बार संस्थान को ही परीक्षा केन्द्र बनाया गया था। तब परीक्षा लेने वालों को बाहर से बुलाया गया था। उन्होंने परीक्षाए ली। परीक्षाओं का नजारा देखते ही बनता था क्योंकि पहली बार ऐसी महिलाएं परीक्षा में बैठी थी जो कभी भी स्कूल नही गई थी परंतु उन्होंने पूरी ईमानदारी से सारे प्रश्नों के उत्तर लिखे। उत्तर कापियों की जाँच नेशनल ओपन स्कूल द्वारा दिल्ली में की गई थी। उस प्रशिक्षण में मध्यप्रदेश के धार, झाबुआ, खरगोन, देवास, भोपाल व इंदौर जिले की 22 महिलाओं ने परीक्षा के फार्म भरे थे। जिसमें से 16 प्रशिक्षणार्थियों ने परीक्षा दी थी। कुल मिलाकर परिणाम काफी अच्छा रहा। केवल 4 जो लिखने–पढ़ने में कमजोर थी और परीक्षा में घबराकर ठीक से उत्तर नही लिख पाई, उनको छोड़कर बाकी 12 अच्छे अंकों से पास हो गई जो कि उनकी कड़ी मेहनत का नतीजा था।

नेशनल ओपन स्कूलिंग की परीक्षा के तीन भाग होते हैं हाजरी, प्रायोगिक व लिखित परीक्षा। कुल 200 अंक होते हैं जिसमें से 30 अंक लिखित प्रश्नों के उत्तर देने के लिए। लिखित परीक्षा में पास होना अनिवार्य रहता है। 90 अंक की प्रायोगिक परीक्षा होती है जिसमें प्रशिक्षक ने तीन घंटे में एक टुक्कीवाला ब्लाऊज बनवाया था। 80 अंक प्रायोगिक की कापी के लिए रखे गए थे जो कि संस्थान की प्रशिक्षिकाओं ने समय–समय पर परीक्षाएं ली थी, उनके अंक व प्रशिक्षणार्थी की विषय पर पकड़, समय व उसके बारे में लिखना या बोलकर बताना सभी बातें शामिल थीं। ये संस्थान का परीक्षा दिलवाने का पहला अनुभव था। परीक्षा में अच्छे परिणाम से संस्थान को काफी हौसला मिला और लगा कि दुनिया में कोई भी काम मुश्किल नहीं है। अगर मन में विश्वास और लगन हो तो कोई भी परीक्षा पास करना मुश्किल नहीं है। इसके बाद संस्थान अगले प्रशिक्षण की तैयारी में पूरे जोश से लग गया। तबसे लेकर आज तक संस्थान अपने हर प्रशिक्षण में प्रशिक्षणार्थियों को नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा आयोजित कटाई–सिलाई की व्यवसायिक परीक्षा की तैयारी करवाता आ रहा है। इसकी शुरूआत प्रशिक्षण के पहले दिन से ही हो जाती है। संस्थान के सामने परीक्षा की तैयारी के दौरान कई तरह की परेशानियां आई और इन कठिनाइयों का दूरकर प्रशिक्षण को व्यवस्थित और आसान बनाया गया।

नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा कटाई–सिलाई के पाठ्यक्रम को सिखाने के लिए जो पुस्तक भेजी जाती थी वह समय पर नहीं प्राप्त होती थी। पुस्तक की तकनीक व व्यवहारिक भाषा अंग्रेजी थी जो गाँव की महिलाओं ने न पढ़ी, न ही सुनी थी। इसलिए निरक्षर महिलाओं को समझ में नहीं आती थी और आठवीं पास महिलाओं को भी बहुत परेशानी होती थी। प्रशिक्षिकाओं को भी कटाई–सिलाई पढ़ाने व सिखाने में बहुत परेशानी होती थी। तब संस्थान ने यह महसूस किया कि कटाई–सिलाई के पाठ्यक्रम को सरल व बोलचाल की भाषा व आसानी से समझने वाले चित्रों के माध्यम से ही प्रशिक्षणार्थियों को सिखाया जा सकता है। संस्थान ने अपने 23 वर्षो के अनुभव के आधार पर पर "आओ कटाई–सिलाई सीखें और सिखाएं" नामक पुस्तक लिखी।

संस्थान ने तैयार की कटाई–सिलाई की पुस्तक

नेशनल ओपन स्कूलिंग के पाठ्यक्रम के आधार पर बरली संस्थान ने ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं के लिए कटाई–सिलाई की पुस्तक लिखी है। इस पुस्तक को निरक्षर महिलाओं को ध्यान में रखकर बनाया गया है। इस पुस्तक में कुल 385 पन्ने हैं तथा इसकी कीमत 395 रूपये हैं लेकिन प्रशिक्षणार्थियों को किताबें 100 रूपए में ही दी जाती हैं। इस पुस्तक में बोलचाल की भाषा का उपयोग किया गया है जो कि सरल और आसान है। चित्रों को देखकर

कटाई–सिलाई आसानी से सीखी जा सकती है। स्थानीय हिन्दी व अंग्रेजी भाषा के शब्दों का प्रयोग सरल है जिससे विषय को समझने में आसानी होती है। पढ़ाने के मुख्य तरीकों में सहभागिता, सीखना–सिखाना और हम–उम्र शिक्षण प्रणाली शामिल है जिसमें सभी सीखने और सिखाने में एक दूसरे की मदद करते हैं। पुस्तक के तीन भाग हैं– सैद्धांतिक, प्रायोगिक और परीक्षा की तैयारी। सैद्धांतिक वाले भाग में सिलाई मशीन एवं उसके औजारों, हाथ के टाँके, तकनीकी शब्द, नाप लेना, ड्राफ्ट, कपड़े को प्रेस कर घड़ी करना आदि के बारे में जानकारी दी जाती है। प्रायोगिक वाले भाग में हाथ के टाँके, सीम, प्लीट्स, डार्ट, टक्स व पाइपिंग, सादा पेटीकोट, छह कली वाला पेटीकोट, झबला, सादी फ्रॉक, चड्डी, ब्लाऊज, कुरती, सलवार और शर्ट बनाना सिखाया जाता है। पुस्तक से सभी पाठों का दोहराव भी करवाया जाता है जिससे प्रशिक्षणार्थी अच्छी तरह से सीख जाए। अंत में परीक्षा की तैयारी करते हैं।

निरक्षरता से ओपन स्कूलिंग की परीक्षा तक

बरली संस्थान में निरक्षर और साक्षर महिलाएं प्रवेश लेती हैं। नेशनल ओपन स्कूलिंग के कटाई–सिलाई के व्यवसायिक प्रशिक्षण में प्रवेश के लिए गाँव के सरपंच के हस्ताक्षर व सील लगी जन्मतिथि का प्रमाण पत्र या अगर स्कूल गई है तो स्कूल की अंकसूची तथा चार पासपोर्ट साइज फोटो की आवश्यकता होती है। नेशनल ओपन स्कूलिंग के आवेदन फार्म, प्रवेश एवं परीक्षा की कुल फीस 270 रूपये है। कई महिलाएं ऐसी भी होती है जो समय पर जन्म प्रमाण पत्र नहीं ला पाती हैं जिसके कारण उनके प्रवेश फार्म नहीं भरे जाते हैं और वे परीक्षा में नही दे पाती हैं। कटाई–सिलाई की परीक्षा देने के लिए साक्षर होना अनिवार्य होता है इसलिए प्रशिक्षण के पहले तीन महीने में निरक्षर प्रशिक्षणार्थियों को साक्षरता के पाठ्यक्रम से हिन्दी में पढ़ना–लिखना और बोलना सिखाया जाता है। इसमें कटाई–सिलाई से संबंधित शब्दों को शामिल किया गया है जिससे उन्हें सिलाई से जुड़े शब्दों व वाक्यों को याद करने, सीखने व समझने में आसानी होती है। साक्षरता प्रशिक्षण के तीन महीने के बाद कटाई–सिलाई की परीक्षा की तैयारी शुरू होती है।

◆ परीक्षा की तैयारी

जैसा कि पहले भी बताया जा चुका है कि लिखित और प्रायोगिक परीक्षाओं की तैयारी साथ–साथ करवाई जाती है। परीक्षा की तैयारी कटाई–सिलाई की पुस्तक के आधार पर होती है। परीक्षा की तैयारी सही तरीके से हो इसके लिए कक्षा को पाँच समूहों में बाँटा जाता है। इन पाँच समूहों को प्रशिक्षण के पहले तीन महीने तक ली गई परीक्षाओं में प्राप्त अंकों के आधार बाँटा जाता है। पहला समूह सबसे अच्छे अंक प्राप्त करने वाले प्रशिक्षणार्थियों का होता है। दूसरे समूह में उससे कम अंक वाले प्रशिक्षणार्थी रहते हैं। इसी तरह तीसरा व चौथा समूह भी बनाया जाता है। पाँचवां समूह सबसे कमजोर प्रशिक्षणार्थियों का होता है। जिस पर ज्यादा ध्यान दिया जाता है। इसमें यही कोशिश की जाती है कि परीक्षा के दिन तक प्रशिक्षणार्थी नेशनल ओपन स्कूलिंग की परीक्षा देने योग्य हो जाए और पास हो सकें। कटाई–सिलाई की पुस्तक में कुल 14 पाठ हैं सबसे पहले एक पाठ का दोहराव होता है और दूसरे दिन परीक्षा होती है। इसी तरह अगले दिन दूसरे पाठ का दोहराव कर परीक्षा ली जाती है। अगले दिन दोनों पाठों की परीक्षा लेते हैं इसी तरह हर दूसरे दिन नये पाठों को मिलाकर दोहराव किया जाता है और परीक्षा ली जाती है। इस तरह प्रशिक्षणार्थी पिछले पाठों में पढ़े गए प्रश्न–उत्तर याद रखते हैं। इस बात का ध्यान रखा जाता है कि प्रशिक्षणार्थी प्रश्नों को समझ पा रहे हैं या नहीं, उत्तर पूरा लिख पा रहे हैं या नहीं, उत्तर लिखते समय प्रश्न नं. लिख रहे हैं या नही, खाली स्थान और सही गलत को हल करने पर ध्यान दे रहे हैं या नहीं

तथा अंतर स्पष्ट करने वाले प्रश्न की समझ है या नहीं। हर रोज प्रशिक्षणार्थियों द्वारा लिखे गये उत्तरों का मूल्यांकन किया जाता है। हर प्रशिक्षणार्थी की उत्तर पुस्तिका जाँचने के बाद उसको उत्तर पुस्तिका दिखाकर समझाया जाता है कि उसने क्या–क्या गलतियाँ की ताकि अगली परीक्षा में वे उसे सुधार लें। इसके साथ–साथ उन्हें उत्तर पुस्तिका पर सही जगह पर नाम, रोल नम्बर, विषय का नाम एवं विषय कोड संख्या लिखना सिखाया जाता है। लिखित परीक्षा के लिए 1998 से 2007 तक के 12 प्रश्न पत्रिकाओं का अध्ययन कर उसके आधार पर प्रश्नपत्र बनाए गए हैं। परीक्षा के 15 दिन पहले उन प्रश्न पत्रिकाओं की परीक्षा ली जाती है ताकि वे उन्हें अच्छी तरह से याद हो जाएं, प्रशिक्षणार्थी परीक्षा में पास हो जाएं व अपने प्रशिक्षण का प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकें।

सन् 1998 से अब तक 9 सालों में बरली संस्थान से 701 महिलाओं ने नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा आयोजित कटाई–सिलाई की परीक्षा दी है। उनमें से 67% महिलाओं ने कटाई–सिलाई और 84% महिलाओं ने टाइपिंग की परीक्षा सफलतापूर्वक पास की है। बहुत सी महिलाएं गाँवों में सिलाई की दुकानें चला रही हैं। कुछ महिलाएं अपने सिलाई केन्द्र चला रही हैं। कई महिलाएं आँगनवाड़ी में काम कर रही हैं तो कुछ आशा कार्यकर्ता हैं। इनमें से कई महिलाओं ने आगे पढाई की और शिक्षिका भी बन गई हैं।

नेशनल ओपन स्कूलिंग के प्रमाण पत्र के फायदे

परीक्षा में पास प्रशिक्षणार्थियों को नेशनल ओपन स्कूलिंग द्वारा प्रमाण पत्र दिया जाता है। प्रमाण पत्र का उपयोग कर वे गैर सरकारी संस्थाओं में काम कर सकती हैं। सरकारी मान्यता प्राप्त प्रमाण पत्र के आधार पर बैंक से लोन लेना आसान होता है और कोई भी छोटा–मोटा काम शुरू किया जा सकता है। प्रमाण पत्र पाकर प्रशिक्षणार्थियों का आत्मविश्वास बढता है और उनके अंदर कुछ नया करने की लगन बढती है। वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकती हैं। रोजगार शुरू करके पैसे कमाकर अपना तथा अपने परिवार को पाल सकती है और दूसरों को भी अपनी कला और कौशल सिखा सकती हैं।

जिनके पास काम नहीं है उन्हें काम दे सकती हैं तथा बेरोजगारी दूर करने में मदद कर सकती हैं। काम करते रहने से स्वयं की क्षमता बढती जाती है और आगे बढने की नई दिशा मिलती है।

नेशनल ओपन स्कूलिंग से संपर्क

नेशनल ओपन स्कूलिंग के मुख्यालय का पता:–

अध्यक्ष,
नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ ओपन स्कूलिंग
ए-24/25 इंस्टीटयूशनल एरिया सेक्टर – 62,
नोएडा (उत्तरप्रदेश) फोन – 0120–2403173

मध्यप्रदेश के क्षेत्रीय केन्द्र का पता:–

क्षेत्रीय निदेशक,
नेशनल इंस्टीटयूट ऑफ ओपन स्कूलिंग
क्षेत्रीय केन्द्र, मानस भवन, श्यामला हिल्स,
भोपाल–462002 मध्यप्रदेश फोन–0755–2661842

संस्थान के समाचार

मार्च माह के शेष समाचार

संस्थान ने प्रदर्शनी में भाग लिया

8 मार्च 2008 को अंर्तराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर इंदौर के सयाजी होटल में महिलाओं के लिए एक दिवसीय प्रर्दशनी लगाई गई। मेले में संस्थान के प्रशिक्षणार्थियों द्वारा बनाए बाटिक एवं ब्लॉक प्रिटिंग के कुर्ते, चादर, सलवार सूट के कपड़े, साड़ियां, कढाई के रूमाल, टेबलमैट, चिड़ियों के झूमर, रजाई, कान के झुमके, मालाएं, पायजेब आदि की प्रदर्शनी लगाई और बड़ी संख्या में लोगों ने कलाकृतियों को देखा और सराहा।

तंबाकू निषेध अभियान पर कार्यक्रम

16 मार्च 2008 को ई टी. वी. मध्यप्रदेश–छत्तीसगढ़ की पहल पर "छोड़ो तंबाकू जियो जिंदगी" विषय पर बरली संस्थान ने एक कार्यक्रम आयोजित किया। मुख्य अतिथि मालवा के प्रसिद्ध कवि श्री नरहरी पटेल ने कहा कि संस्थान के प्रशिक्षणार्थी जब वापस अपने गाँवों में जाएंगे तो अपनी भाषा में लोगों को तंबाकू के नुकसान के बारे में बताएंगे क्योंकि अपनी बोली का दिमाग पर सीधा असर पड़ता है। संस्थान की निदेशिका ने कहा कि गाँव के लोगों को गीतों के माध्यम से शिक्षा देना बहुत आसान है जो हिन्दी नहीं जानते उन्हें ये बहनें अपनी भाषा में शिक्षित करेंगी।

महिला पोलिटेक्निक कॉलेज का समूह

18 मार्च 2008 को महिला पोलिटेक्निक कॉलेज, इंदौर के 35 लड़कियों का समूह संस्थान देखने आया। संस्थान के

प्रबंधक श्री जिम्मी मगिलिगन ने संस्थान में आदिवासी महिलाओं के लिए चलाए जा रहे सभी कार्यक्रमों और सौर ऊर्जा के उपयोग की जानकारी दी।

राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता

डॉ. बाबा साहेब अम्बेडकर नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ सोशल साइंसेस, महू में 'डॉ. अम्बेडकर के दर्शन और सामाजिक परिवर्तन' विषय पर 19–20 मार्च 2008 को दो दिवसीय संगोष्ठी के समापन पर निदेशिका ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि सिर्फ बाबा साहब अम्बेडकर के विचारों की बात करने से समाज में कोई बदलाव नहीं आएगा। बदलाव तब आएगा जब सभी उनके द्वारा बताई गई शिक्षाओं पर चलेंगे।

छत्तीसगढ़ : विस्तार केन्द्रों के समाचार

15 मार्च 2008 को बरली संस्थान के ग्रामीण विस्तार केन्द्र इच्छापुर, छत्तीसगढ में माता–पिता की बैठक में प्रशिक्षणार्थियों के 35 रिश्तेदारों ने भाग लिया। कार्यक्रम का परिचय देते हुए केन्द्र प्रभारी लता यादव ने कहा कि माता–पिता व परिवारजनों की बैठक का उद्देश्य है कि माता–पिता आएं और देखें कि उनकी बेटियां यहाँ क्या

सीखती हैं, कौन–कौन से विषय सीखती हैं और उनको सिखाने वाले कौन हैं? प्रशिक्षणार्थी कुमारी अमीला की माँ श्रीमती मानबाई कांगे ने कहा कि पहले उनकी बेटी छोटी–छोटी बातों में बहुत जल्दी नाराज हो जाती थी लेकिन बरली विस्तार केन्द्र में आने से उसके स्वभाव में बहुत बदलाव आ गया है। अब वह सभी से प्यार करती है और जो सीखकर आती है उसे अपने छोटे भाई बहनों को भी सिखाती है। श्रीमती कुन्ती तेता ने कहा कि उनकी बेटी कटाई–सिलाई सीखकर स्वयं आत्मनिर्भर हो रही है। शादी करके जिस घर में भी जाएगी वहाँ जाकर भी कुछ कमा सकेगी। श्रीमती सगनीबाई ने कहा कि हमारे माता–पिता ने हमें नहीं पढाया लेकिन बेटी को मैंने गरीबी की हालत में भी 8वीं कक्षा तक पढाया है और अब विस्तार केन्द्र में प्रशिक्षण के बाद उसमें बहुत आत्मविश्वास आ गया है। प्रशिक्षिका श्रीमती संतोषी यादव ने आभार दिया।

अप्रैल माह के समाचार

रेडियो पर वार्ता

12 अप्रैल 2008 को इंदौर के रेडियो वेराइटीज एशिया हिन्दी सर्विस के द्वारा सतप्रकाशन संचार केन्द्र इंदौर से बरली संस्थान के कार्यक्रमों की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि ग्रामीण और आदिवासी महिलाओं की हालत आज भी बहुत खराब है। इसका मुख्य कारण है समाज की ऐसी सोच व उनका महिलाओं के प्रति व्यवहार। महिलाओं को आगे बढाने के लिए इस सोच और व्यवहार को बदलना जरूरी है। मान्यताओं को बदलने के लिए उन्होंने बहाई शिक्षाओं के बारे में भी बताया।

अंतर्राष्ट्रीय बाल फिल्म महोत्सव

21–23 अप्रैल 2008 को कोटेक वर्ल्ड किड्स अंतर्राष्ट्रीय फिल्म महोत्सव व स्टेट बैंक आफ इंदौर ने ट्रेजर आयलैड, इंदौर में बच्चों के लिए शिक्षा देने वाली फिल्में दिखाई। बरली संस्थान के सभी प्रशिक्षणार्थी तथा स्टाफ ने 21 अप्रैल को नन्हा जासूस और हनुमान फिल्में देखी और उन्हें बहुत मजा आया।

विश्वबंधुत्व आंदोलन का समूह संस्थान में

18 अप्रैल 2008 को विश्वबंधुत्व आंदोलन इंदौर से 10 महिलाओं का समूह संस्थान देखने आया। उन्होंने संस्थान में होने वाली सभी गतिविधियों की जानकारी ली और यहाँ पर चलाए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में जाना। संस्थान के बारे में दिव्या मैथ्यू ने कहा कि मैंने इस तरह का संस्थान अपने जीवन में पहले कभी नहीं देखा। यहाँ पर सभी लोग बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। प्रिंसी होजे ने कहा कि समाज गरीब और अनपढ लड़कियों को उनके परिवार और समाज का आधार स्तंभ बनाने का अत्यंत सराहनीय काम कर रहा है। अनिसिटा ने कहा कि संस्थान का मानवता के प्रति

समर्पण काफी प्रेरणादायक है। गोरेटी ने कहा कि संस्थान प्रशिक्षण के माध्यम से लड़कियों को उनके जीवन में स्वतंत्र बनाने का प्रयास कर रहा है जिससे उनका जीवन दूसरों के लिए उदाहरण बन सके। सिस्टर लाएलामा का कहना था कि वह अपने को भाग्यशाली समझती हैं कि उन्हें ऐसे संस्थान में आने का मौका मिला जो ग्रामीण महिलाओं के विकास व सशक्तिकरण के लिए समर्पित हैं।

पुणे की छात्रा संस्थान में

सिमबायोसिस इंस्टीटयूट ऑफ मीडिया एंड कम्युनिकेशन, पुणे की छात्रा सुश्री निधी शर्मा ने एक महीने तक संस्थान

में अनुभव लिया जो कि उनकी पढाई का ही हिस्सा था। जाते समय उन्होंने कहा "बरली संस्थान में काम करना मेरे लिए एक सीखने का अनुभव रहा। मैने आज तक ऐसे पवित्र संस्थान में काम नहीं किया है जहाँ पर हर कोई परिवार के सदस्यों की तरह मिलकर काम करता है। यहाँ पर प्रशिक्षण ले रही प्रशिक्षणार्थियों से भी मैंने बहुत कुछ सीखा है और उनसे मुझे नई प्रेरणा मिली है। मै बरली के हर सदस्य और अपने अनुभव को हमेशा याद रखूँगी।"

स्वयंसेविकाएं : नताशा रोहानी

कनाडा की नताशा रोहानी ने संस्थान में छः महीने तक कला व छपाई के काम में सेवाएं दी। संस्थान से जाते समय उन्होंने कहा "बरली में सेवा देना मेरे जीवन के अनुभवों में सबसे अच्छा अनुभव है जो उनके हृदय में विशेष स्थान रखता है। उन्होंने आगे कहा संस्थान में प्रशिक्षण ले रही आदिवासी महिलाओं और यहाँ पर काम करने वाले सभी स्टाफ को वे कभी भी भूल नही पाएंगी।"

प्रिंटेड मैटर–बुक पोस्ट

पता

____

____

____

____

शबनम फानी

ऑस्ट्रेलिया की शबनम फानी ने संस्थान में 1 महीने की सेवा दी। उन्होंने कहा "बरली में सेवा देकर मुझे बहुत खुशी हुई। संस्थान में प्रशिक्षण के माध्यम से जो महिलाओं के सशक्तिकरण का काम चल रहा है वह अत्यंत सराहनीय है।"

पूर्व प्रशिक्षणार्थी सुश्री सारिका मुकेश का पत्र

सारिका ने संस्थान को पत्र लिखकर अपनी गतिविधियों की जानकारी दी। उसने अपने पत्र में लिखा है कि जो शिक्षा और प्रशिक्षण वह संस्थान से लेकर गई थी उससे उसका जीवन संवर गया है। संस्थान में आने से पहले उसने कभी नहीं सोचा था कि प्रशिक्षण से उसका और उसके बच्चे के भविष्य में सुधार होगा लेकिन यह केवल प्रशिक्षण से ही संभव हुआ। उसे जिला बड़वानी से पुनरीक्षित राष्ट्रीय क्षय नियंत्रण कार्यक्रम का प्रमाण पत्र मिला है। वह टी.बी. के रोगी को दवाई व सलाह देती है। उसे लोगों को स्वास्थ्य की जानकारी देना बहुत अच्छा लगता है। आगे वह लिखती है कि अगर उसके ज्ञान से किसी को लाभ होता है तो उसे ज्ञान बाँटने में खुशी होती है। वह 10 वीं कक्षा की परीक्षा दे रही है। वर्तमान में जो गरीब परिवारों के बच्चों को कम्प्यूटर शिक्षा का प्रशिक्षण दिया गया उसमें उसने भी 2 माह का प्रशिक्षण लिया है। उसका सपना बहुत बड़ी समाज सेविका बनने का है। इसके लिए वह काम कर रही है। उसे 'बरली की दुनिया' हर महीने मिलती है और उसे पूरा पढ़ती है और दूसरों को भी सुनाती है।

इस पत्रिका के प्रकाशन में सहयोगी

सुश्री विजयश्री, श्री राकेश गुप्ता व श्री जिम्मी मगिलिगन

विशेष सूचना

प्रशिक्षण लेकर आप स्वयं के लिए, अपने परिवार और अपने गाँव के लिए जो भी काम कर रहे हों, हमें जरूर लिखकर भेजें ताकि आपके समाचार ''बरली की दुनिया'' में छाप सकें।

संपादक ''बरली की दुनिया''

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान

180, भमोरी, न्यू देवास रोड़,

इंदौर–452010 (म.प्र.) फोन : 0731–2554066

रजि. न. MPHIN / 2007 / 22179

बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान की ओर से बरली ग्रामीण महिला विकास संस्थान, 180 भमोरी, न्यू देवास रोड़, इन्दौर – 452010 द्वारा मुद्रित एवं प्रकाशित

मुद्रण स्थल : राजा ऑफसेट, 863/9,नेहरूनगर, इन्दौर द्वारा मुद्रित संपादक : डॉ. (श्रीमती) जनक पलटा मगिलिगन